संवाद

युवाओं की मांग-एक स्वच्छ पर्यावरण

अदिति बिश्नोई

'देखा न आपने बाहर क्या हाल है?' दिल्ली के बाहरी क्षेत्र में पुनर्वास बस्ती भल्स्वा की पूजा ने हमसे मिलते ही पूछा। पूजा ऊबड़-खाबड़ सड़क, बहते गटर, धंसी-फंसी झुग्गियों तथा कूड़े के अंबार की सड़ाध की ओर इशारा कर रही थी, जहां उसका घर है। 'यहां पर रहना कठिन है। पानी की कमी है, बंद सीवर की समस्या भी है। और गंदे सामुदायिक पाखानों की बात न ही करें तो अच्छा जिन्हें हम इस्तेमाल करने को मजबूर हैं।'

आज पूजा (19) व उसके साथी सोनी (18) फरज़ाना (18) शबनम (17) आकाश व अनेकों युवा दिल्ली की गैर सरकारी संस्था *एक्शन इण्डिया* जो गरीब पलायनकर्त्ता व झुग्गीवासियों के बीच काम करती है, के युवा समूह के सदस्य हैं। पिछले दो सालों से *एक्शन इण्डिया, जागोरी व विमेन इन सिटीज़ इंटरनेशनल* के साथ मिलकर एक परियोजना चला रही है। इस परियोजना के अंतर्गत सार्वजनिक स्तर पर पानी, स्वच्छता, निकास, ठोस कचरा प्रबंधन बिजली आदि तक पहुंच में लैगिंक अंतर तथा इससे महिलाओं की सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभावों का निरीक्षण किया जा रहा है। इस प्रक्रिया के दौरान समुदाय में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता तथा युवाओं में नेतृत्व क्षमता का विकास भी किया जा रहा है। इन खराब हालातों में जीने की मजबूरी पूजा के सभी साथियों के चेहरों पर साफ़ झलकती है। सोनी बताती है, "भल्स्वा में औरत होना एक श्राप है। हर जगह गंदगी और मुफ़लिसी है। हमारा दिन पानी भरने और रात मच्छर भगाने में गुज़रती है।"

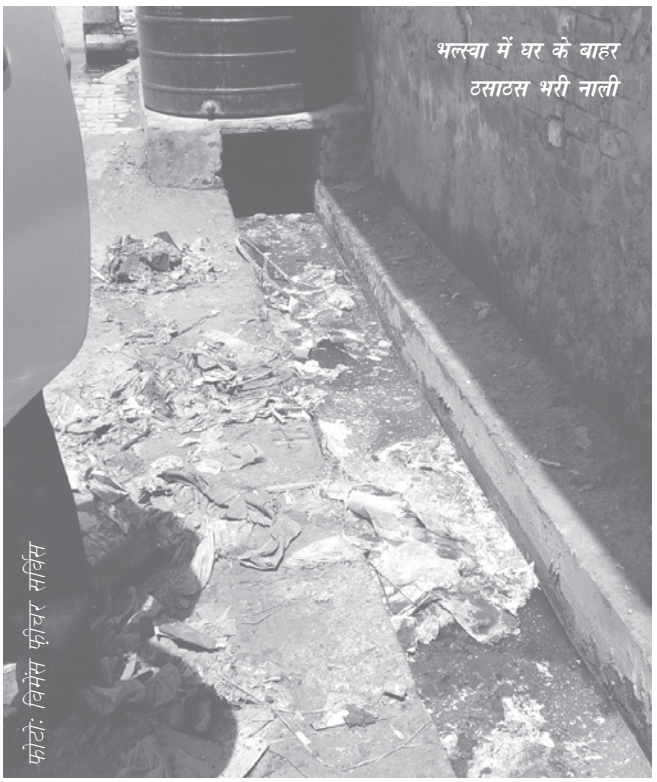

भल्स्वा में घर के बाहर ठसाठस भरी नाली

फोटो: विमेंस फ़ीचर सर्विस

पूजा और सोनी एक आम भल्स्वा निवासी के जीवन की सटीक समीक्षा करती हैं। नौ साल पूर्व यहां रहने वाले 22000 नागरिकों को केन्द्रीय व दक्षिण दिल्ली से विस्थापित करके भल्स्वा में 'फैंक' दिया गया था। यह विस्थापन शहर को 'खूबसूरत' बनाने की प्रक्रिया का हिस्सा था और ज़ाहिर है इस पुनर्वास के लिए कोई नियोजन नहीं किया गया था।

जागोरी परियोजना की सलाहकार, प्रभा खोसला के विचार में 'भल्स्वा एक विस्थापन कैम्प सा प्रतीत होता है। प्रशासन को शहर के बाहर इस नवीन इलाकों में लोगों को बसाने से पहले विकसित करना चाहिए था। किसी को भी इन हालातों में नहीं रहना चाहिए।'

किसी को भी यहां नहीं रहना चाहिए और युवा समूह के सदस्य—बीस लड़कियां और पंद्रह लड़के अब खामोश रहकर सब सहने को तैयार नहीं है। इनमें से काफी स्कूल छोड़ चुके हैं और परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिए पार्ट-टाइम नौकरी करते हैं। सक्रियता उनमें कूट-कूट के

भरी है। वे नियमित रूप से मिलते हैं और जानकारी बांटते है जिसका अर्थ है कि वे समुदाय की समस्याओं से बखूबी वाकिफ़ हैं।

पूजा यहां की नालियों की भी हालत बयान करती है। 'यहां हर परिवार में कम से कम छः सदस्य हैं पर नालियां इतना बोझ उठाने में असक्षम है। नाली के पानी का निकास मुख्य सीवर तक न होने से पानी जमा रहता है। कूड़ा डालने से भी नालियां भर जाती है। यहां पर पीलिया जैसी बीमारी आम है। साफ़ पेयजल की भी समस्या है। जो लोग बाहर काम पर जाते हैं वे अपने परिवारों के लिए पीने का पानी भरकर लाते हैं।'

सोनी जोड़ती है, 'दो नई पाइप लाइनें डाली गई हैं परन्तु पानी आने का कोई समय नहीं है। पानी इतना मटमैला है कि उसका रंग चाय जैसा लगता है। हमारे कपड़े इस पानी में धोने से पीले हो जाते हैं। पानी का टैंकर हफ्ते-दस दिन में एक बार आता है और उसका पानी भी काफी गंदा होता है।

परन्तु यह गंदा पानी भी कीमती है। आकाश जो युवा समूह का सदस्य है ने अनुमान लगाया है कि पानी का टैंकर आने पर छीना-झपटी के नतीजतन चालीस प्रतिशत पानी गिर जाता है। अगर सभी लोग कतार में खड़े होकर पानी भरें तो समान बंटवारा भी होगा और सबको पानी मिलेगा। 'हमें व्यवहार में परिवर्तन करने की आवश्यकता है और हम नाटक, पोस्टर और चर्चाओं के ज़रिए ऐसा करने का प्रयास कर रहे हैं।'

अधिकांश घरों में शौचालय नहीं है इसलिए लोग सार्वजनिक शौचालयों का उपयोग करते हैं। हर ब्लॉक में पांच सार्वजनिक शौचालय होने के बावजूद केवल एक ही चालू है। सबसे ज़्यादा तकलीफ़ महिलाओं व लड़कियों को उठानी पड़ती है। शौचालय पानी की कमी के कारण गंदे रहते हैं। कुछ दिनों पहले तक महिला शौचालय में बिजली का बल्ब भी नहीं लगा था। अब बल्ब तो है पर रात में अंधेरा होने के कारण वहां जाने में औरतों को डर लगता है।

और तो और यह सुविधा मुफ्त नहीं है। महिलाएं व लड़कियां उसके उपयोग के लिए एक रुपया व पुरुष दो रुपये देते हैं। शौचालय केवल सुबह 6 से 12 व शाम 4 से 9 के बीच खुले रहते हैं। माहवारी के समय औरतों के पास कोई विकल्प नहीं होता।

भल्स्वा के युवा कार्यकर्ता न सिर्फ़ समस्याओं से अवगत हैं पर इसके निदान भी तलाश रहे हैं। वे राशन कार्ड व सूचना के अधिकार के बारे में जानते हैं और इन विषयों पर सलाह भी देते हैं। समूह ने अनेक चेतना जागृति अभियान भी चलाए हैं जिनमें जल संरक्षण, स्वच्छता जैसे विषय उठाए गए हैं।

इन युवाओं को प्रोत्साहित करने तथा इनके साथ जानकारी बांटने का काफी श्रेय *एक्शन इण्डिया* की सामुदायिक कार्यकर्ता वीरमती व उमा को जाता है। वीरमती कहती है 'ये युवा हमारे काम को आगे ले जाएंगे। हाल ही में हमने एक मोहल्ला सभा आयोजित की थी जिसमें पुलिस, जल व स्वच्छता विभाग के अफ्सर व स्थानीय काउंसिलर आमंत्रित थे। इन युवाओं ने ही ढाई सौ लोगों को इकट्ठा किया और उन्हें तकलीफ़ों के बारे में अफ्सरों को बताने के लिए तैयार किया।'

यह महज़ शुरूआत है उस बदलाव की जिसका तसव्वुर भल्स्वा के युवा देख रहे हैं। कुछ भी आसानी से हासिल नहीं होगा। अब उस बगीचे को ही ले लीजिए जो युवा समूह स्थानीय बच्चों के लिए तैयार करना चाह रहे हैं। इसके लिए एक हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। छियासठ दस्तखत जुटाकर एक निश्चित जगह को बगीचे के लिए चुना गया। पर कुछ भी नहीं बदला। धीरे-धीरे वह जगह भी कूड़ा फैंकने के मैदान में तब्दील हो गई है।

पर ये युवा पीछे हटने वाले नहीं हैं। जैसा कि पूजा ने हमें बताया, 'मैं इतनी सारी चीज़ें करना चाहती हूं— जल संरक्षण के विषय में जानकारी बांटना, मासिक धर्म के समय सफ़ाई रखना और पैड को सही जगह फैंकना, घर के कचरे को भी यथास्थान डालना आदि।

सोनी जोड़ती है, 'मुझे बहुत गुस्सा आता है जब मैं पड़ोस के लोगों को इस जगह पर कचरा फैंकते देखती हूं। कई दफ़ा मैंने उन्हें रोका भी है। पर लड़की हूं न इसलिए यह काम थोड़ा मुश्किल है। पर अब मैं युवा समूह के साथ जुड़ गई हूं। अब मेरी आवाज़ बुलंद है। अब मैं हार नहीं मानूंगी।'

अदिति बिश्नोई, *विमेंस फ़ीचर सर्विस, नई दिल्ली में फ़ीचर लेखिका हैं।*